|| ॐ ||

# श्रीगुरुवरस्तवः

(हिन्दीभावन्वादसहितः)

डा० बलजिन्नाथ पण्डित

श्रीपीठ-सैद्धदर्शन शोध संस्थान

जम्मू

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

# श्री गुरुदेव महाराज

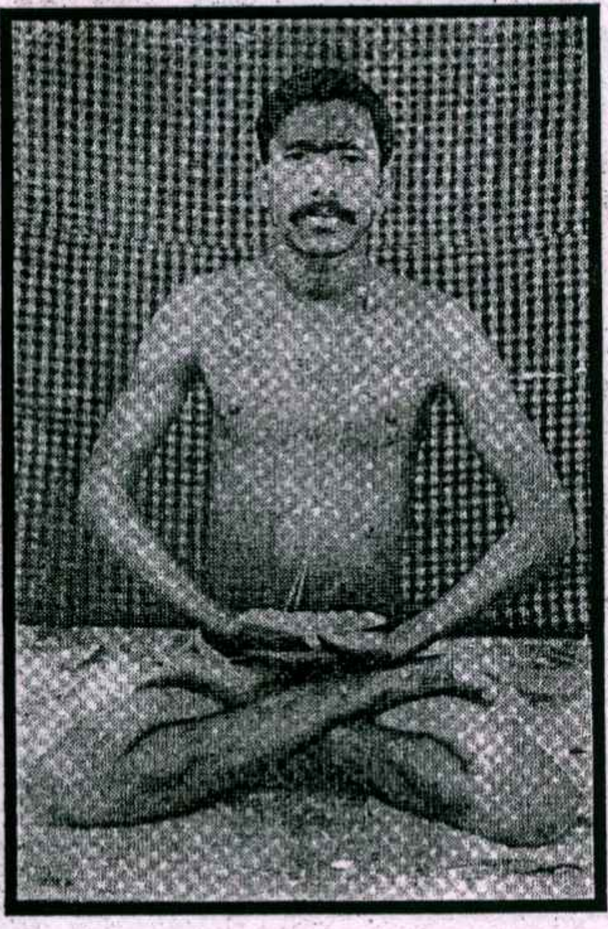

चित्र यौवन काल का

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

# श्री गुरुदेव

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

# प्राक्कथन

गत सं० २०३६ में कार्तिक शुक्ल पक्ष की नवमी को पूज्यपाद गुरुदेव श्रीमान आ० अमृतवाग्भव जी अपने पार्थिव शरीर को छोड़कर सिद्ध लोकों के प्रति सङ्क्रमण कर गए। उन्ही दिनों इस स्तोत्र के केवल आठ श्लोंकों वाले लघुकाय का निर्माण करके उसे प्रकाशित किया गया और सोलहवें दिन रचे गए भण्डारे पर उपस्थित भक्तों में उसका वितरण किया गया।

तदनन्तर पूज्यपाद जी के पूर्व जन्मों का और इस जन्म के विषय मे भी कई एक आवश्यक बातों का परिचय देने के लिए वर्तमान वैशाख २०४० में कुछ और श्लोकों की रचना की गई और कहीं कहीं रचना को सुधारा गया। सारे नए पुराने श्लोकों को जब महाराज जी के कई एक भक्तों को सुनाया तो उनमें से डा० ब्रजनन्दन शर्मा ने यह सुझाव सामने रखा कि जिस तरह से महाराज जी ने स्वयं उन सिद्धजनों के शरीर, आकृति वेष आदि का स्पष्ट वर्णन किया है जिनके दर्शन उन्हें समय समय पर होते रहे। उसी तरह से उनकी आकृति वेष आदि का वर्णन भी इस स्तोत्र में किया जाना चाहिए। फिर उनका विचार यह भी है कि ऐसे वर्णनात्मक श्लोक पूज्यपाद जी की पूजा करने वाले भक्तों के लिए विशेष तन्मयता का साधन बन सकते हैं।

मैंने इस सुझाव को बहुत अच्छा समझते हुए एक तो महाराज जी के शरीर वर्णन के श्लोकों का निर्माण किया और दूसरे भक्तों की स्थितियों को विचार में रखतें हुए कुछ एक नए प्रार्थनात्मक श्लोक भी बना दिए। ऐसा करने पर आठ श्लोकों वाला स्तोत्र अब बीस श्लोकों का बन गया। अन्त में श्री गुरु महाराज जी की ही शैली का अनुसरण करते हुए राज्य



CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

उपसंहारात्मक तीन श्लोक और जोड़ दिए।

दिल्ली से श्री रत्नलाल जैन की ओर से यह सुझाव आया कि जो कोई भी नया प्रकाशन प्रकाशित किया जाए उसमें संस्कृत के साथ हिन्दी अनुवाद अवश्य ही रखा जाय। तदनुसार अब इस स्तोत्र का हिन्दी अनुवाद भी लिख दिया।

इस सानुवाद स्तोत्र को श्रीपीठ-सैद्धदर्शन शोध संस्थान की ओर से प्रकाशित किया जा रहा है। इसमें पूज्यपाद जी के दो चित्र प्रकाशित किए जा रहे है। एक तेईस वर्ष पुराना है, परन्तु दूसरा उनके यौवन काल का हैं। उसे भक्त जनों ने चन्दन लगाकर कुछ विवर्ण कर दिया है। अतः ब्लाक में स्पष्ट आया नहीं। फिर भी एक दुर्लभ चित्र है। इन दोनों चित्रों को और साक्षात् दर्शनों को दृष्टि में रखते हुए ही पूज्यपाद जी के शरीर वर्णन के श्लोकों का निर्माण किया गया है।

आशा है पूज्यपाद जी के भक्तजन इस स्तोत्र को पसन्द करेंगे और अनके अमुद्रित ग्रन्थों का प्रकाशन करने के लिए श्रीपीठ का उत्साह बढ़ाएगे।

मन्त्री

श्रीपीठ



CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

# श्री गुरुवरस्तवः

आचार्यकाय महिताय महामहिम्ने
योगीश्वराय परमार्थविदे परस्मै।
सर्वेषु तन्त्रगहनेषु स्वतन्त्रकाय
नित्यं नमोऽस्तु गुरवेऽमृतवाग्भवाय।।१।।

बड़ी महिमा वाले और सर्वत्र पूजित गुरुवर आचार्य महोदय श्रीमद् अमृतवाग्भव जी को हमारा नित्य प्रणाम हो। वे परमार्थ तत्व को जानने वाले अत्युत्तम योगिराज थे और तन्त्रों के सभी रहस्यों में उन्हें पूरा स्वातन्त्र्य था।

यः सर्वशास्त्रसुरहस्यविदां वरिष्ठः
श्रीपाणिनीयगहने सुकृताधिकारः ।
कौमार एव निगमागममर्मवेत्ता
तस्मै नमोऽस्तु गुरवेऽमृतवाग्भवाय ।।२।।


CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

जो समस्त शास्त्रों के शुभ और उत्तम रहस्यों को जानने वाले विद्धानों में श्रेष्ठ थे, जिन्होंने पाणिनि मुनि के व्याकरण शास्त्र के रहस्यों पर पूरा अधिकार प्राप्त किया था और जो बाल्य अवस्था में ही वेदों और आगमों के रहस्यों को जानते थे उन गुरवर श्रीमान् आचार्य अमृतवाग्भव जी को हमारा प्रणाम हो।

शास्त्रों के शुभ रहस्य धर्म और मोक्ष आदि को प्राप्त करने में आगे बढ़ातें है। उनमें कोई अशुभ रहस्य भी होते है जिनके द्धारा मारण, मोहन, वशीकरण आदि प्रयोजन सिद्ध होते है। गुरु जी महाराज ऊपरोक्त शुभ रहस्यों को ही भली भान्ति जानते थे।

विद्याधरः स्वगुरुकोपवशात् पृथिव्यां
भूत्वा नृपस्तदनु विप्रसुतो द्विवारम।
यस्तुर्यजन्मनि पराद्वयदृष्टिमापत्
तस्मै नमोऽस्तु गुरवेऽमृतवाग्भवाय।।३।।

विद्याधर होते हुए अपने गुरु के क्रोध से जिन्होने इस पृथ्वी पर उतर कर पहले एक राजा के रूप में जन्म लिया, तदनन्तर जो दो बार ब्राह्मण बालक बने और चौथे जन्म में जिन्होंने परम अद्वैतमयी दृष्टि को प्राप्त किया उन गुरुदेव श्रीमान् अमृतवाग्भव जी को हमारा प्रणाम हो।

विद्याधर भुवः अर्थात अन्तरिक्ष लोक में रहने वाले देवताओं की एक जाति का नाम है। उस रूप में वहां रहते हुए किन्हीं ईष्यालु विद्याधरों के द्वारा झूठ मूठ शिकायतें करने पर इनके वहां के गुरु जी ने क्रुद्ध होकर जो शाप दिया उसके प्रभाव से ये पहले तो एक बड़ी रियास के राजा के रूप में यहां प्रकट हुए। काफी समय तक अपने



CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

राज्य में शासन करके बाद में दो बार ब्राह्मण बालक के रूप में प्रकट हुए। एक बार आयु केवल पांच छः वर्ष की और दूसरी बार दस बारह वर्ष रही। इस चौथे जन्म में भगवान दुर्वासा ने इन पर कृपा कर शाम्भवयोग की प्रक्रिया सिखा दी। उसके अभ्यास से इन्ही सुविशाल अद्वैत दृष्टि को प्राप्त किया जिसमें माया और अविद्या भी तथा पाप,पुण्य,क्लेश,बन्धन आदि भी सब के सब एक मात्र परब्रह्म की परमेश्वरता के ही चमकत्कारों के रूप में दीखते है और संसार भी मोक्ष ही बन जाता है।

वैदर्भब्राह्मणकुले विदुषां वरिष्ठे
वाराणसीचिरनिवासविवृद्धपुण्ये।
जातः समुद्रगहनादिव यः सुधांशु-
स्तस्मै नमोऽस्तु गुरवेऽमृतवाग्भवाय।।४।।

चिरकाल से काशी में निवास करने से विशेष महिमाशील बने हुए विदर्भदेशीय विद्वान् ब्राह्मणों के एक कुल में उन्होनें वैसे जन्म लिया जैसे अमृतमयी किरणों वाले चन्द्रमा ने समुद्र की गहराई से। उन गुरुवर श्रीमान् अमृतवाग्भव जी को हमारा प्रणाम हो।

इनके पूर्वज विदर्भ देश में रहने वाले तैतिरीय शाखा के कौण्डिन्य गोत्र के महाराष्ट्री ब्राह्मण थे। विदर्भ देश से प्रयाग आकर बसे और वहां से उन्ही में से कुछ लोग काशी आकर बस गए। कई पीढ़ियों से वहीं बसते रहे।

श्रीकृष्णसूरिरिह यस्य पिता प्रबुद्धो
राधाभिधा च जननी परदेवतेव।
नाम्ना च यो वरकलो भुवि वैद्यनाथ-


CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

स्तस्मै नमोऽस्तु गुरवेऽमृतवाग्भवाय।।५।।

आध्यात्मिक दृष्टि से जाग पड़े हुए श्रीकृष्ण शास्त्री जिनके पिता इस लोक में बने और जिनकी परादेवता सदृशी माता का नाम राधा देवी था तथा भूलोक में जिनका नाम श्री वैद्यनाथ शास्त्री वरकले था, उन गुरवर श्रीमान् अमृतवाग्भव जी को हमारा प्रणाम हो।

सम्प्राप्य जन्म महिते सुपुरे प्रयागे
विद्यां मुदैव समुपार्ज्य शिवस्य पुर्याम्।
बाल्येऽपि योऽलभत तत्र परां प्रतिष्ठां
तस्मै नमोऽस्तु गुरवेऽमृतवाग्भंवाय।।६।।

जिन्होंने सदैव पूजित, परम पवित्र, प्रयाग नगर में जन्म पाकर शिवजी की नगरी काशी में बिना प्रयास के विद्योपार्जन किया और बाल्य-काल में ही वहाँ के विद्वानों में बड़ी प्रतिष्ठा प्राप्त की उन गुरुदेव श्रीमान् अमृतवाग्भव जी को हमा रा प्रणाम हो।

कौमारके पितुरवाप्य रहस्यभूतां
विद्यां श्रियः सतततद्वरिवस्यया यः।
आजीवनं ह्मनुबभूव कृपां जनन्या-
स्तस्मै नमोऽस्तु गुरवेऽमृतवाग्भवाय।।७।।

जिन्हों ने बचपन में ही अपने पिता जी से रहस्यमयी श्री विद्या की दीक्षा प्राप्त की और उसकी सतत उपासना से जो जीवनभर जगत जननी की कृपा का अनुभव करते रहे, उन गुरुदेव श्रीमान् अमृतवाग्भव जी को हमारा प्रणाम हो।

दुर्वाससो मुनिवरस्य मुखारविन्दाद्
लब्ध्वा परां य इंह शाम्भवयोगदीक्षाम्।
अभ्यस्य तत्फलमवाप महद्विचित्रं
तस्मै नमोऽस्तु गुरवेऽमृतवाग्भवाय।।८।।



CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

महामुनीन्द्र भगवान् दुर्वासा के मुखकमल से जिन्होंने इसी जन्म में उत्कृष्टतर शाम्भवयोग की दीक्षा प्राप्त की और उसका अभ्यास करके जिन्होंने उसके सुविचित्र फल को भी प्राप्त किया उन गुरुदेव श्रीमान अमृतवाग्भव जी को हमारा प्रणाम हो।

शाम्भव योग के उन फलों का वर्णन आचार्य महोदय ने अपने सिद्ध-महा-रहस्यम् नामक ग्रन्थ में विस्तार से किया है।

ईषत्सुगौरवदनस्तनुगात्रयष्टि-
र्नात्युच्छ्रितस्तनुतरोदरको नतांसः।
यो दीर्घबाहुरथ चायतचारुवक्षा-
स्तस्मै नमोऽस्तु गुरवेऽमृवाग्भवाय।।६।।

उनका चेहरा थोड़ा-थोड़ा सुन्दर-गौर वर्ण का था, शरीर पतला था, बहुत ऊंचे कद का नही था; पेट कुछ अधिक पतला था, कन्धे झुके हुए थे; बाजू लम्बे थे और वक्षस्थल विशाल तथा सुन्दर था; ऐसे शरीर वाले गुरुदेव श्रीमान् अमृतवाग्भव जी को हमारा प्रणाम हो।

दीर्घाननस्तिलसुमोपमतुङ्गनासः
शोणांघ्रिपाणियुगलः सुविशालभालः।
सुभ्रूयुगोऽचपलखञ्जनलोचनो य
स्तस्मै नमोऽस्तु गुरवेऽमृतवाग्भवाय।।१०।।

उनका चेहरा लम्बा था; नासिका तिल के फूल के समान सुन्दर और ऊंची थी दोनो हाथ और दोनो पैर (अर्थात हथेलियां और तलवे) लालिमा युक्त थे, माथा काफी विशाल था; भौहें सुन्दर थी; खञ्जन पक्षी के समान आंखे थी परन्तु थी स्थिर; इस प्रकार के अगों वाले गुरुदेव श्रीमान् अमृतवाग्भव जी को हमारा प्रणाम हो।



CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

पूर्व सुमुण्डितमुखो घनचारुकूर्चो
भृङ्गालिनीलपरिमार्जितकुन्तलो यः।
सौम्याम्बरस्तिलकभूषितभालदेश-
स्तस्मै नमोऽस्तु गुरवेऽमृतवाग्भवाय।।११।।

जीवन के पूर्व भाग में उनका मुख अच्छी तरह से मूण्डवाया रहता था, मूछें घनी और सुन्दर होती थी, भौरों के समूह के समान काले और सुन्दर केश खूब सजाए हुए थे, वेष अतीव सौम्य होता था और माथा तिलक से विभूषित हुआ करता था। ऐसे हमारे गुरुदेव श्रीमान् अमृत-वाग्भव जी को हमारा प्रणाम हो।

श्मश्रूणि कूर्चकचलोमकदम्बकानि
पश्चादसंस्कृतवपूंष्यपि धारयन् यः।
वृद्धोऽपि कान्तिविकिराननबिम्बरम्य
स्तस्मै नमोऽस्तु गुरवेऽमृतवाग्भवाय।।१२।।

जीवन के चरम भाग में वे बिना संवारे दाढ़ी, मूंछ,रोम,केश आदि के समूहों को खुले रखते थे, फिर भी तथा वृद्धावस्था में होते हुए भी कान्ति को टपकाते हुए अपने मुखमण्डल से वे बहुत सुन्दर लगते थे। ऐसे हमारे गुरुदेव श्रीमान् अमृतवाग्भव् जी को हमारा प्रणाम हो।

यो यौवनेऽपि विचचार विरक्तचित्तो
योग्याञ्जनानुपदिशन्निह योगमार्गम्।
शिष्याश्च यस्य बहवो निवसन्ति देशे
तस्मै नमोऽस्तु गुरवेऽमृतवाग्भवाय।।१३।।

जो यौवन में भी विरक्त चित्त होकर जहांतहां योग्य अधिकारियों को योगमार्ग का उपदेश करते हुए घूमते रहे और जिनके बहुत से शिष्य देशभर में रह रहे हैं उन हमारे गुरुदेव श्रीमान् अमृतावाग्भव जी को हमारा प्रणाम हो।



CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

राजर्षिवर्यनिवहैः कृतभूरिसेवो
भक्तैः सदा सहृदयैः कृतपादपूजः।
पात्रेषु यः सुप्रतिपादितभूरिवित्त-
स्तस्मै नमोऽस्तु गुरवेऽमृतवाग्भवाय।।१४।।

उत्तम राजर्षियों के समूह जिनकी बहुत सेवा करते रहे, भावुक भक्त जन जिनके पैरो की सदा पूजा करते रहे और जो योग्य पात्रों को काफी धन का दान देते रहे ऐसे उन हमारे गुरुदेव श्रीमान् अमृतवाग्भव जी को हमारा प्रणाम हो।

शास्त्राणि यो रचितवान् नवया सुदृष्ट्या
धर्मार्थमोक्षफलदानि जनोपकृत्यै।
व्याख्यातवांश्च कतिचित् स्वयमेव देव-
स्तस्मै नमोऽस्तु गुरवेऽमृतवाग्भवाय।।१५।।

जिन्होंने जनता के उपकार के लिए नई और उत्तम दृष्टि को लेकर धर्म,अर्थ,और मोक्ष रुपी फलों को देने वाले (अनेकों) शास्त्रों की रचना की और (उनमें से) कई एक की व्याख्याएं भी जिन देवस्वरूप ने स्वयं लिख दी, ऐसे हमारे गुरुदेव श्रीमान् अमृतवाग्भव जी को हमारा प्रणाम हो।

उन शास्त्रों में से जो जो प्रकाशित हुए हैं उनकी सूची अन्तिम पृष्ट पर दी हुई है।

हे नाथ सिद्धगतिमाप्य न विस्मरास्मान्
कष्टानि नः क्षपय भद्रशतानि देहि।
सत्प्रेरणां कुरु च नो हृदये निविष्ट-
स्तुभ्यं नमोऽस्तु गुरवेऽमृतवाग्भवाय।।१६।।



CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

हे नाथ,सिद्ध पुरुषों की गति को प्राप्त करके अब हमें मत भूल जाइए; हमारे कष्टों का नाश करते रहिए और हमें सैंकड़ों कल्याणमय जीवन-फल देते रहिए। फिर अन्तर्यामी रुप से हमारे ह्रदयों में विद्यमान रहते हुए हमें कल्याणमयी प्रेरणा देते रहिए। हमारे गुरुदेव रूपी आप श्रीमान् अमृतवाग्भव जी को हमारा प्रणाम हो।

भक्त्या चिरं समुपश्रित्य पदं त्वदीयं
हे नाथ, कं त्वदपरं शरणं ब्रजेम ।
यत्र स्थितोऽसि तत एव कृपां विधेहि
तुभ्यं नमोऽस्तु गुरवेऽमृतवाग्भवाय।।१७।।

हे नाथ चिरकाल तक आप के चरणों के आसरे में रहते हुए हम आप को छोड़ कर किस और महानुभाव की शरण में जाएं ? आप जहां भी हो वहीं से हमारे ऊपर कृपा करते रहिए। हमारे गुरुदेव रूपी आप श्रीमान अमृतवाग्भव जी को ही हमारा प्रणाम हो।

रुग्णा वयं हि परिवारभरेण भुग्ना
मग्ना भवाब्धिगहने कलिकष्टभग्नाः।
तत्तू र्णमेहि परिपाहि कृपार्द्र चेता-
स्तुभ्यं नमोऽस्तु गुरवेऽमृतवाग्भवाय।।१८।।

हम रोगों से घिरे हुए हैं, परिवार के बोझ से दबे हुए हैं, संसार रूपी समुद्र की गहराई में डूबे हुए हैं और कलिकाल के कष्टों ने हमें तोड़कर रख दिया है। तो कृपा से पसीजे हुए ह्रदय से आप तुरन्त ही आकर हमारी परिपालना कीजिए; हमारे गुरुदेव रूपी आप श्रीमान् अमृतवाग्भव जी को हमारा प्रणाम हो।



CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

हे नाथ दानवगणैः परिपीड्यमानां
वीक्षस्व भारतभुवं नितरामनाथाम्।
अस्याः सुमङ् गलकृते प्रयतस्व तूर्ण
तुभ्यं नमोऽस्तु गुरवेऽमृतवाग्भवाय।।१६।।

हे नाथ, जरा देखिए कि माता भारत भूमि असुरगणों से पीडित की जा रही है और कैसे अनाथ बनी हुई है। तुरन्त मंगल के लिए प्रयत्न कीजिए। हमारे गुरुदेव रूपी आप श्रीमान् अमृतवाग्भव जी को हमारा प्रणाम हो।

सिद्धाय योगिपतयेऽद्धयदृष्टिभाजे
सज्ज्ञानिने गहनतत्त्वरहस्यवक्त्रे
स्वैरं च साम्बशिवभक्तिरसोपभेक्त्रे
नित्यं नमोऽस्तु गुरवेऽमृतवाग्भवायं।।२०।।

हमारे उन गुरुदेव श्रीमान् अमृतवाग्भव जी को सतत हमारे प्रणाम हों जो परम अद्धैतमयी दृष्टि से देखने वाले सिद्ध योगिराज हैं, जो सच्चे ज्ञानी हैं, जो शास्त्रों के गम्भीर तत्त्वों के रहस्यों को बताने वाले हैं और शिव-शक्ति की परा भक्ति के रस का उपभोग जो स्वातन्त्रयपूर्वक करते रहते हैं।

यद्यपि गुरुदेव शरीर को छोड़ कर ऊर्ध्व लोकों के प्रति उत्क्रमण कर गए हैं, फिर भी वे ऊपरोक्त विशेषताओं समेत अब भी विद्धमान है। अतः उनका उपरोक्त वर्णन वर्तमानकाल में किया गया, भूतकाल में नहीं।

सिद्धलोकान् समुत्क्रान्ते गुरुनाथे महात्मनि।
स्तोत्रं रचितवाञ्छिष्यो बलजिन्नाथपण्डितः ।।२१।।

जब महात्मा गुरुदेव सिद्धलोकों के प्रति उत्क्रमण कर गए तो उनके शिष्य बलजिन्नाथ पण्डित ने इस स्तोत्र का निर्माण किया।


CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

भक्त्या स्तवं प्रगायदयो भवताद् वरदोऽनिशम्।।२२।।

इस स्तोत्र से सिद्धलोक में रहने वाले गुरुदेव अच्छी तरह से प्रसन्न हो जाएं और इस स्तोत्र को भक्ति पूर्वक सदा गाने वालों को वे अभीष्ट वर सदा देते रहें।

विक्रमाब्दे शून्यवेदनभोनेत्रेऽथ माधवे।

तृतीयस्यां सिते जम्बूपुरे पूर्तिं गता स्तुतिः।।२३।।

विक्रम संवत् २०४० मे वैशाख मास के शुक्लपक्ष की तृतीया को यह स्तोत्र जम्मू नगर में पूरा तैयार हो गया।

लगभग छः मास पहले इस स्तोत्र का निर्माण लघुकाय रूप में हुआ था। अब इसका विस्तार करके इसे पूरा किया गया और हिन्दी में अनुवाद भी किया गया।

इति श्रीगुरुवरस्तवों

बलजिन्नाथपण्डितविरचितः।



CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri